SHODH DHARA

शोध - धारा

वर्ष : २००८ जून अंक : १

REPRINT

त्रैमासिक शोध पत्रिका

(मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केंद्रित)

(Based on Humanities and Social Sciences)

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

शोध–धारा, जून, २००८, अंक १, पृष्ठ ६६–६८

सुभाष बोस के नेतृत्व में

-डॉ० नगमा खानम ★

भारतीय सवतन्त्रता संग्राम के महानायक सुभाष चन्द्र बोस भारतीय जनता के उन नेताओं में से एक हैं, जिन्होने प्रगतिशील एवं क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी विचारधारा के कारण नेताजी के रुप में प्रसिद्धि पायी।

बोस के जीवन की सबसे पहली आकांक्षा थी कि क्रान्ती की विभिन्न इकाइयों को संगठित कर इण्डियन नेशनल आर्मी बनायें ताकि भारत से ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंका जा सके। लेकिन भारत की विभिन्न पार्टियों ने उनके इस कार्य को हतोत्साहित किया।

हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन मुख्य रुप से अहिंसावादी था और देश का वातावरण भी उसी रुप में था। गाँधी जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण जनता ने अहिंसात्मक आन्दोलन को स्वीकृति दी–निष्क्रय प्रतिरोध जिसका अस्त्र था। इन परिस्थितियों में सुभाष ने हिंसात्मक आन्दोलन पर बल दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियों का लाभ उठाते हुए संकटपूर्ण सशस्त्र के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन को संचालित करने का साहस भरा निर्णय लिया। बोस ने कहा था हमें शत्रु ने तलवार से गुलाम बनाया है। हमें उससे तलवार से ही युद्ध करना होगा। सत्याग्रह को हमें सशस्त्र युद्ध में बदलना होगा।[1]

दुर्भाग्यवश लम्बे समय तक देश की आजादी की प्राप्ति में नेताजी के योगदान का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया एवं स्वतंत्रता प्राप्ति में केवल अहिंसक साधनों को ही महत्व दिया जाता रहा। भारतीय संग्राम के इतिहास को केवल भारतीय कांग्रेस एवं गाँधी जी के अहिंसावादी आन्दोलन के इतिहास के रुप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। जबकि स्वतंत्रता संग्राम में क्रान्तिकारी आन्दोलन को भारत एवं विदेशों के भी अनेक इतिहासकारों ने अमूल्य स्थान दिया है।

ब्रिटिश लेखक माइकेल एडवार्ड्स ने इस विषय में टिप्पणी की थी कि केवल एक विशिष्ट व्यक्ति ने व्यक्तिगत रुप से एक पृथक एवं सामरिक मार्ग को ग्रहण किया और वास्तव में भारत उनके प्रति किसी व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक ऋणी है। इस कथन में अतिशयोक्ति नहीं है कि ब्रिटेन ने १९४७ में भारत को स्वतन्त्रता देने का जो निर्णय लिया उस पर नेताजी की सैनिक गतिविधियों का विस्तृत सीमा तक प्रभाव था। नेताजी सुभाष और उनकी आजाद हिन्द फौज़ की वीरता, त्याग और सामरिक कौशल ने न केवल जन–सामान्य में बल्कि भारतीय सेना के तीनों वर्गों में विद्रोह की चिंगारी फूँक दी थी। १९४६ में नेताजी की नीति के ही प्रभावस्वरुप भारतीय नौ सेना के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। ब्रिटेन की

★ २०, तिलक नगर, **उरई (जालौन), (उ०प्र०)**